बेटी का दान क्यों?

संतोष बजाज

अकेले होती है हर नई शुरुआत
अगर शक्ति है पास तुम्हारे
तो ज़माना देगा साथ

ब्याह का मंडप सजा हुआ था। वेद मंत्रों के साथ विधि-विधान से कार्यक्रम चालू था। अंत में आई 'कन्यादान' की रस्म। इसके अनुसार पिता अपनी बेटी का हाथ पकड़ कर वर के हाथ में देकर कन्यादान की रीति पूरी करता है।

ठीक उस समय मधु ने अपना हाथ खींच लिया। बड़े मीठे स्वर में माता-पिता से बोली, "आप मुझे दान क्यों कर रहे हैं? मैं न तो बेजान चीज हूं, न घरेलू सामान और न धन-जायदाद। मैं भी इंसान हूं। मेरा दान मत कीजिए। हां, मेरे साथी के हाथ में मेरा हाथ देकर यह आशीर्वाद दीजिए की हम दोनों जीवन भर एक दूसरे के दुख-सुख में साथ निभा सकें।"

पंडाल में उपस्थित जन खुसर-फुसर करने लगे। मधु के पिता ने अपनी बुद्धिमती लाड़ली बेटी की ओर गर्व से देखा और हंस कर पंडित जी से बोले—"मेरी बेटी की बात गलत तो नहीं पंडित जी। इन दोनों को जीवन भर आनंद से एक साथ रहने का आशीर्वाद दीजिए।"

मधु की इस छोटी सी बात के पीछे

उसका आत्म-विश्वास और स्वाभिमान दोनों छिपे थे।

हमारे देश में बेटा पैदा होने पर खुशी मनाई जाती है- गीत गाए जाते हैं, मिठाई बांटी जाती है। हिजड़े नचवाए जाते हैं। पर बेटी पैदा होने पर यह सब नहीं होता। हिजड़े तो लड़की पैदा होने पर कभी भी नहीं नचवाए जाते।

हमारे पड़ोस में बेटा पैदा हुआ था। ढोलक की थाप पर ज़ोर-ज़ोर से बेसुरे फिल्मी गानों पर नाच हो रहा था। नाच-गाना खत्म हुआ और हिजड़े दक्षिणा लेकर चलने लगे तो सीमा की दादी उन्हें अपने घर चलने के लिए कहने लगीं। सब औरतें हैरान थीं

क्योंकि उसके घर तो पोती हुई थी। एक औरत ने ठिठोली करते हुए पूछ ही लिया, "क्या बात है माता जी! इन्हे किसलिए ले जा रही हो?"

सीमा की दादी बोली, "मेरी पोती हुई है। क्या ये लोग वहां नाच-गाना नहीं कर सकते? पहले नन्हा राजू था, अब उसकी बहन आई है। राजू के समय नाच-गाना हुआ था। अब क्यों नहीं होगा? वह इकलौता बेटा है तो यह भी तो इकलौती बेटी है।"

दादी के मुंह से ऐसी बात सुन कर स्त्रियां खिसियानी होकर चुप हो गईं। दादी ने धूमधाम से नाच-गाना कराया।

पंजाब के लोकगीतों में बड़ा दर्द छिपा है। एक गीत का अर्थ है कि पिता अपनी बेटी को विदा करने की तैयारी कर रहा है। बेटी न जाने के बहाने खोजती है। पिता उसकी एक-एक बात का उत्तर देते हुए 'अपने घर' जाने के लिए कहता है।

बेटी कहती है
तेरे महलां दे विच विच वे
बाबुल डोला नहीं लंघदा।
(तेरे महल के अंदर से मेरी डोली नहीं निकल पा रही।)

पिता का उत्तर है
इक इक इट पुटा देवांगा
धीए घर जा अपने।
(एक-एक ईंट उखड़वा कर मैं इसे खुला कर दूंगा। बेटी, तू अपने घर जा।)

बेटी सवाल करती है
तेरे महलां दे विच विच वे
बाबुल गुड़िया कौन खेले।
(तेरे महल में फिर गुड़िया कौन खेलेगा।)

पिता उत्तर देता है
मेरियां खेड़न पोतरियां
धीए घर जा अपने।
(अब मेरी पोतियां गुड़ियों का खेल खेलेंगी। बेटी, तू अपने घर जा।)

पास बेठी मेघा यह गीत सुन रही थी। अपनी मां की ओर देख कर बोली—"मां, ऐसा क्यों होता है? जब भी बुजुर्ग बातचीत करते हैं तो लड़की को 'पराया धन' कहते हैं। उसकी अनजानी ससुराल को उसका घर कहते हैं। विदा के समय लड़की से यही कहा जाता है कि "जा बेटी, अब वही तेरा घर है। तेरी डोली यहां से उठी है, तेरी अर्थी वहां से उठेगी।"

मां बेटी की बात सुनकर मुस्करा कर चुप रह गई। मेघा ने कहा—"मेरे लिए ऐसा मत सोचना, मां। मैं तो इसे भी अपना घर मानती हूं। वहां जाऊंगी तो उन लोगों के साथ हिल-मिल कर रहूंगी। उन्हें अपनाने की पूरी कोशिश करूंगी। लेकिन यदि मुझे जरूरत पड़ी तो क्या तुम मुझे लौट जाने के लिए कहोगी?"

मां की आंखे भर आईं और ममता-भरे स्वर में वह बोली—"ऐसी बात नहीं है। वह घर तुम्हारा होगा तो यह भी तुम्हारा ही रहेगा।

तुम्हें किसी समय लगे कि तुम पर अत्याचार हो रहा है या अन्याय हो रहा है तो तुम्हारे लिए इस घर के दरवाजे सदा खुले रहेंगे। तुम अपने पुराने अधिकार से इस घर में ममता और हमदर्दी की हकदार सदा रहोगी। चुपचाप रह कर अन्याय सहना भी उतना ही बुरा है जितना अन्याय करना। इसलिए यदि तुम सही हो और फिर भी तुम्हें उस घर में सम्मान या अधिकार नहीं मिलता तो हम तुम्हारी सहायता के लिए तुम्हारे साथ हैं। इस घर की दहलीज पार कर वापस आने में कोई संकोच न करना। जलने-मरने की मूर्खता कभी मत करना।" □